ISSN 2319 - 8508

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GALAXY LINK

VOLUME - VI ISSUE - I NOVEMBER-APRIL- 2017-18 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - 4.361
www.sjifactor.com

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Professor

CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
22	Analysing Stress Management Among Higher Secondary School Students Of Aurangabad City, With Respect To Gender **Muntajeeb Ali Baig**	115-119
23	Minority is a Play Thing: Rushdie's Midnight's Children **Dr. Syed Imtiaz Jukkalkar**	120-124
	Hindi	
१	नक्सलवाद की समस्या का अध्ययन : कुछ केस स्टडी (जिला दन्तेवाड़ा के विशेष सन्दर्भ में) **डॉ. पवन कुमार त्रिपाठी**	१-३
२	शैक्षिक मूल्य और उसके आधार **अभिषेक सेंगर**	४-९
३	उच्च शिक्षा समस्या और समाधान **प्रा. डॉ. हुसे र. रा.**	१०-११
४	मुक्तिबोध और उनकी भूल-गलती **डॉ. कल्पना वर्मा**	१२-१४
५	गंगानी परिवार के पुरोधा – पं. हजारीलाल गंगानी **डॉ. वन्दना चौबे** **अमित गंगानी**	१५-१६
६	एक ऐतिहासिक फैसला ! तीन तलाक **प्रा. डॉ. सुलक्षणा जाधव** **संज्योती जगन्नाथ रोठे**	१७-१९
७	मुद्रित जनसंचार माध्यमों में हिन्दी भाषा: समाचार पत्र -पत्रिकाएँ **प्रा. विक्रम जी. राठोड**	२०-२१
८	अलक्षित आवाज का मर्मस्पर्शी आख्यान: सुर बंजारन **डॉ. भगवान गव्हाडे**	२२-२६
९	हिंदी का रिपोर्ताज साहित्य **प्रा. डॉ. विठ्ठल तुळशीराम वजीर**	२७-२९

'गॅलेक्सि लिंक' या सहमयि प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वत: लेखकावर राहील.
हे नियतकालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अँण्ड प्रिंटर्स, जयसिंगपूरा, विद्यापीठ गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

९

हिंदी का रिपोर्ताज साहित्य

प्रा. डॉ. विठ्ठल तुळशीराम वजीर
संशोधक मार्गदर्शक, हिन्दी विभाग लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय, परतुर, जि. जालना (महाराष्ट्र).

भुमिका

आधुनिक गद्य साहित्य का विकास विभिन्न विधाओं से हुआ है। जिसमें उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध इस कल्पना प्रधान विधाओं के साथ संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, साक्षात्कार, यात्रावर्णन एवं रिपोर्ताज जैसी अकाल्पनिक विधाओं का भी समावेश है । कल्पना शक्ति के आधार पर मनोवांछित संसार की सर्जना की जाती है, लेकिन अकाल्पनिक साहित्य का आशय एवं विषय स्वअनुभूत या तथ्यों पर आधारित होता है । आज रिपोर्ताज साहित्य ने अपना स्वतंत्र विधागत स्थान निश्चित किया है । जो अन्य गद्य विधाओं की तरह ही पाश्चात्य जगत की देन है । जिसके संदर्भ में यहाँ संक्षिप्त में जानकारी दी जा रही है 'रिपोर्ताज' यह फ्रांसीस भाषा का शब्द है । जो भारत में उसी रुप में आया है । उसी समय अंग्रेजी का । 'रिपोर्ट' शब्द भी समाचार पत्रों के माध्यम से इस विधा की ओर संकेत करने लगा था । सच्चाई यह है कि यह शब्द अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' से गहरा सम्बन्ध रखता है । पत्रकारिता से जुडी और विकसित हुई इस गद्य विधा ने साहित्य में आकर 'भावनामय सूचना' का रुप ले लिया है । 'रिपोर्ताज' और । 'रिपोर्ट' दोनो एक नही है, 'रिपोर्ट से यह भिन्न है । रिपोर्टजहा कलात्मक अभिव्यक्ति का अभाव होता है तथा तथ्यों का मात्र लेखा – जोखा होता है, वहां 'रिपोर्ताज' में तथ्यों को कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त किया जाता है । रिपोर्ताज के स्वरुप एवं अर्थ पर प्रकाश डालते हुए आलोचकों एवं अभ्यासकों ने रिपोर्ताज को परिभाषित किया है, जो संक्षेप में इस प्रकार है ।

'रिपोर्ताज' की परिभाषाएँ

बाबू गुलाबराय – 'रिपोर्ट' की भांति यह घटना या घटनाओं का वर्णन तो अवश्य होता है किन्तू उसमें लेखक के हृदय का निजी उत्साह रहता है, जो वस्तुगत सत्य पर बिना किसी प्रकार का आवरण डाले उसको प्रभावमय बना देता है ।"

प्रकाशचन्द्र गुप्त – । 'रिपोर्ताज' तीव्र भावना में रंगी साहित्यिक रिपोर्ट के अतिरिक्त कोई और वस्तु नहीं । संघर्ष के खन्दकों में निर्मित यह कला रुप है ।"

डॉ. रामचन्द्र तिवारी – ।"जब सफल पत्रकार या साहित्यकार वास्तविक घटना को अपने भीतर निहित मूल्यों के अनुसार एक विशेषकोन से उपस्थित करके प्रभावपूर्ण बना देता हैं तो वह 'रिपोर्ताज' की कला – सृष्टी करता है ।"

डॉ. रामविलास शर्मा – '' किसी घटना या घटनाओं का ऐसा वर्णन कि वस्तुगत सत्य पाठक के हृदय को प्रभावित कर सके, रिपोर्ताज कहलायेगा । कल्पना के सहारे कोई रिपोर्ताज लेखक नहीं हो सकता । रिपोर्ताज लिखने के लिए जनता का सच्चा प्रेम होना चाहिए ।"

अधिक परिभाषाओं के वनखण्ड में न भटक कर उपर्युक्त मतों के आधार पर रिपोर्ताज के कुछ सामान्य लक्षण निर्धारित किये जा सकते है । ये मत परिभाषाएँ रिपोर्ताज के लक्षणों के निर्धारण में सहायुयता पहुंचाती हैं । इस दृष्टि से –

1) रिपोर्ताज में आंखों देखी, कानों सुनी घटना का वर्णन होता है ।
2) यह वर्णन प्रभावपूर्ण होता है ।

Assist Professor
Shastri Sr Col

3) वर्णन को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए उसे भावनाओं संवेदनाओं के संयोग से साहित्यिक कलात्मक रुप में प्रस्तुत करना होता है ।

4) इसमें लेखक की निजी अनुभूतियाँ, भावनायें और विचार तथा दृष्टिकोन भी सक्रिय रहता है ।

5) इस विधा में हमारे विचार से मानवीय संवेदनाओं और मानवीय सरोकारों की पृष्ठभूमि में अवश्य रखा जाता है।

उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर इस विधा को इन शब्दों से परिभाषित कर सकते है –

"रिपोर्ताज" कथेत्तर गद्य का वह विवरणात्मक घटना– प्रधान साहित्यिक रुप है, जिसमें किसी घटना का तथ्यपरक एवं मानवीय सरोकारों से युक्त प्रभावपूर्ण विवरण दिया जाता है । इस विवरण में लेखक का निजी दृष्टिकोन सक्रिय रहता है और जनता के प्रति सच्चा प्रेम भी ।"

हिन्दी गद्य साहित्य ने इस विधा का स्वीकार 1938 में किया है । हिन्दी का पहला । 'रिपोर्ताज' शिवदानसिंह चौहान कृत 'लक्ष्मीपुरा' है । इस कृति से शुरु हुई यह विधा उत्तरोत्तर विकसित होती गयी और हो रही है । फिर भी आलोचकों एवं अभ्यासकों ने चाहिए वैसा ध्यान इस विधा की ओर न देकर इस विधा के साथ अन्याय किया है। यह रिपोर्ताज साहित्य भारतीय इतिहास, भौगोलिक परिवेश, परिवेश गत संस्कृति, परिवेशगत सामाजिक समस्याएँ एवं व्यवहार, तत्कालिन समाज की आर्थिक स्थिति जानने की दृष्टी से महत्वपूर्ण दस्तावेज है । इसलिए भी इस विधा के अध्ययन की महत आवष्यकता है ।

हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य का उद्‌भव एवं विकासनिम्न रुप से हुआ है । इसमें । 'लक्ष्मीपुरा' से शुरु हुई यह परंपरा 'तुफानों' के बीच रांगेय राघव 1946, 'अल्मोडे का बाजार' प्रकाषचंद्र गुप्त, 'पहाडों में प्रेममय संगीत' उपेन्द्रनाथ अश्क, 'क्षण बोले कण मुस्काए' कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, । 'ऋणजल धनजल' फणीश्वरनाथ रेणु, । 'युवराज की यात्रा' चंडीप्रसाद सिंह आदि तक पहुँची । हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य का लेखन करनेवाले साहित्यकारों में प्रमुख है – शिवदानसिंह चौहान– 'लक्ष्मीपुरा' 1938, रांगेय राघव – 'तुफानो के बीच' 1946, प्रकाशचंद्र गुप्ता – 'रेखाचित्र' मे संग्रहीत 'स्वराज्य भवन', 'अल्मोडे का बाजार', 'बंगाल का अकाल,' उपेन्द्रनाथ अश्क – 'रेखाएं और चित्र' 1955, में संकलीत 'पहाडों में प्रेममय संगीत', समनारायण उपाध्याय, 'गरीब और अमीर पुस्तके' 1958, में संग्रहीत 'नववर्षा के समारोह में', भदन्त आनंद कौसल्यायन – 'देश की मिट्‌टी बोलती है', शिवसागर मिश्र– 'वे लडेंगे हजार साल' 1966, डॉ. धर्मवीर भारती – 'युध्द यात्रा' 1972, 'धर्म क्षेत्र युध्द क्षेत्र' कन्हैयालाल मिश्रा प्रभाकर – 'क्षण बोले कण मुस्काए,' शमशेर बहादूर सिह – 'प्लाट का मोर्चा,' श्रीकांत वर्मा – 'अपोलो का रथ,' फणीश्वरनाथ रेणु – 'ऋणजळ धनजल' 1975, चंडीप्रसाद सिंह – 'युवराज की यात्रा,' राजनारायण मिश्र – 'घुमता हुआ आईना' 2007, भगवतशरण उपाध्याय – 'पुरातत्व का रोमांस' 2008 आदी ।

वर्तमान जीवन की व्यस्तता ने रिपोर्ताज के विकास में बहुत योग दिया है । अव्यवस्था, उथल – पुथल और यांत्रिक जीवन की व्यस्तता के युग में साहित्य के लघु रुपों का विकास अत्यंत स्वाभाविक है । नित्य परिवर्तित होनेवाली जीवन की छोटी– छोटी समस्याओं और सत्यों को साहित्य के लघु रुपों के माध्यम से ही चित्रित किया जा सकता है । इस प्रकार हिन्दी रिपोर्ताज वर्तमान व्यस्त और जटिल जीवन की मॉग है तथा देन भी है । हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य के कथ्य से संबंधीत जानकारी में रचनाकारों की देश विदेश यात्रा के बाद आये अनुभव एवं कथ्य के विषय जैसे समय – समय पर लिखे गये रिपोर्ताज किस परिस्थितियों से संबंधीत है । कैसे जनता, भुखमरी, महंगाई, महामारी, अकाल, बाढ जैसी विपदाऐं, युध्द जैसी भयावह अवस्थाये और आज देश में हो रहे आम आदमी पर अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, आतंकवाद से भयभीत समाज जुझ रहा है । इसका लेखा – जोखा निम्नांकित साहित्यकारों के रिपोर्ताजों में हमें देखने के लिए मिलता है जैसे शिवदानसिंह

...पुरा,' रांगेय राघव के 'तुफानो के बीच,' प्रकाशचंद्र गुप्ता 'स्वराज्य भवन,' 'अल्मोडे का बाजार,' आदि | रिपोर्ताज ...कारों के साहित्य में शिल्प विन्यास अत्यन्त सरल और सहज है | रिपोर्ताजकार बिम्बों, प्रतिकों का महत्व सृजन करते ...के विचारों के अनुरुप उनका शिल्प विधान अत्यंत स्वाभाविक रुप में रिपोर्ताज विधा में प्रयुक्त हुआ है | रिपोर्ताज में बिम्बों, प्रतिकों, अलंकारो, मिथकों, फंतासी, भाषा – शैली आदि शिल्पगत प्रयोगो का संयुक्तिक उपयोग किया गया है

...र्भ ग्रंथ सूची)

1) वीरपाल वर्मा – हिन्दी रिपोर्ताज
2) डॉ. नगेंद्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास
3) डॉ.शिवकुमार शर्मा – हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ
4) डॉ. सुमन राजे – हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास
5) डॉ. बाबूराव देसाई – गद्य की विविध विधाएँ
6) डॉ. मधु धवन – साहित्यक विधाएँ सैध्दांतिक पक्ष
7) डॉ. हरिमोहन – साहित्यक विधाएँ : पुनर्विचार
8) डॉ. शशि सहगल – साहित्य विधाएँ